5

ब्राह्मण साहित्य

पूर्व पाठों में आपने वेदों की संहिता विषय में अधिकता से समझ लिया है। इस पाठ में संहिता विषय में और ब्राह्मण विषय में सामान्य रूप से आलोचना करेगें। संहिता और ब्राह्मण में महान् भेद है। जैसे – अधिकांश संख्या में संहिता छन्दोबद्ध है। उनमे कुछ अंश ही गद्यात्मक है, किन्तु ब्राह्मण ग्रन्थ सभी प्रकार से गद्यात्मक ही है। इनके विवेचना विषयों में भी भेद है। इनके संहिता और ब्राह्मण के विषय में यहाँ और अधिक जानोंगे। और ब्राह्मणों में प्रतिपादित विषय पर भी सामान्य ज्ञान को प्राप्त करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- ब्राह्मण ग्रन्थों के महत्त्वपूर्ण विषयों को जान पाने में;
- मुख्य आख्यान और उनमें प्रतिपादित विषयों को समझ पाने में;
- संहिता ब्राह्मण की भिन्नता बता पाने में;
- देव अमर कैसे हुए इस विषय को समझ पाने में; और
- प्रधान ब्राह्मण ग्रन्थों के विषय में विस्तार से जान पाने में।

5.1 सामान्य परिचय

ग्रन्थवाची ब्राह्मण शब्द विशेष रूप से नपुंसकलिङ्ग में ही प्रयुक्त होता है। मेदिनीकोश के अनुसार से वेदभाग का सूचक ब्राह्मण शब्द का प्रयोग तीनो लिङ्गों में होता है। जैसे – ब्राह्मण शब्द ब्रह्मसङ्घात में और वेदभाग में नपुंसक लिङ्ग में होता है। ग्रन्थ के अर्थ में ब्राह्मण शब्द का प्रयोग

टिप्पणियाँ

पाणिनीय व्याकरण में (सू.३/४/३६), निरुक्त में (४/२७), ब्राह्मण में (शतप.४/६/९/२०), और ऐतरेय ब्राह्मण में (६/२५/८/२) केवल प्राप्त नहीं होता अपितु ब्राह्मण विषय में तैत्तिरीय संहिता में कहा है - एतद् ब्राह्मणान्येव पञ्च हवींषि (तै. सं. ३/७/१/१)। इस अर्थ के विषय में कुछ भी भिन्न मत नहीं है। ब्राह्मण यह ब्रह्म के व्याख्या परक ग्रन्थों के नाम है। ब्रह्म शब्द स्वयं अनेक अर्थो में प्रयुक्त होता है, जैसे मन्त्र के अर्थ में - ब्रह्म वै मन्त्रः...(शत. ब्रा.७/१/१/५)। इसी प्रकार से वैदिक मन्त्रों के व्याख्यान का भाग होने से इसका ब्राह्मण नामकरण हुआ। ब्राह्मण शब्द का अन्य अर्थ भी होता है - यज्ञ। यज्ञीय कर्मकाण्ड की व्याख्या विवरण के सम्पादन ब्राह्मण ग्रन्थों का मुख्य विषय है। ब्राह्मणों में मन्त्र-कर्म-विनियोग की व्याख्या है। ब्राह्मण के अन्तरङ्ग परीक्षा से ज्ञात होता है कि ये ग्रन्थ यज्ञों के वैज्ञानिक, आधिभौतिक, तथा अध्यात्मिक विषयों का प्रतिपादन करता है। और ब्राह्मण शब्द के विषय में जैसे कहा है -

ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां च व्याख्यानग्रन्थः।
(भट्टभास्करः- वै. सं. १/५/१ भाष्यम्)

नैरुक्तं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्।
प्रतिष्ठानं विधिश्चौव ब्राह्मणं तदिहोच्यते।। (वाचस्पतिमिश्रः)

इस कथन से सिद्ध होता है की वेद दो प्रकार का है - मन्त्ररूप और ब्राह्मणरूप। और यह ब्राह्मणभाग भी वेद ही है। वेद से शेष ये ब्राह्मण ग्रन्थ यज्ञानुष्ठान का विस्तृत वर्णन करते हैं। कुछ कथा भी ब्राह्मण ग्रन्थों में प्राप्त होती है। प्रत्येक वेद शाखा के अनुसार से ब्राह्मण ग्रन्थ और आरण्यक ग्रन्थ भिन्न होते हैं।

यह ब्राह्मण साहित्य हमेशा ही विशाल और व्यापक है। यह साहित्य गद्यात्मक है। यज्ञ का विधान कब करना चाहिए। और उसके लिए कौन से साधनों की आवश्यकता है। और कौन उन यज्ञों के अधिकारी है। इन विषयों की विवेचना ब्राह्मण साहित्य में की है। वर्त्तमान में प्राप्त हुए प्रमुख ब्राह्मण वेदों का अनुसरण करने की सङ्ख्या इस प्रकार से है - १. ऐतरेय ब्राह्मण, २. शाङ्खायन ब्राह्मण (ऋग्वेदीय), ३. शतपथ ब्राह्मण (शुक्लयजुर्वेदीय), ४. तैत्तिरीय ब्राह्मण (कृष्णयजुर्वेदीय), ५. ताण्ड्य, ६. षड्विंश, ७. सामविधान, ८. आर्षेय, ९. दैवत, १०. उपनिषद्-ब्राह्मण, ११. संहितोपनिषद् ब्राह्मण, १२. वंश ब्राह्मण, १३. जैमिनीय ब्राह्मण (सामवेदीय), १४ और गोपथ ब्राह्मण (अथर्ववेदीय) है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में शतपथ ब्राह्मण सबसे महत्त्व का माना जाता है। और वह विशालकाय है। वहीं यागों के अनुष्ठानों का प्रतिपादन सबसे उत्तम रीति से किया है। वहाँ याग विषय पर अडिग सहित विवेचना भी प्रस्तुत की है।

निरुक्त आदि ग्रन्थ इस प्रकार जाना जाता है ऐसा कहकर ब्राह्मण ग्रन्थों का ही प्रमाण रूप से निर्देश किया है। इस शब्द की व्याख्या में दुर्गाचार्य ने लिखा है - 'इस प्रकार ब्राह्मण में भी विचार किया गया है' (निरु. टी. ३/११, २/१७)। पाणिनि ने अष्टाध्यायी सूत्र में अनुब्राह्मण शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है - अनुब्राह्मणादिनिः (पा. सू. ४/२/६२)। ब्राह्मण के समान ग्रन्थ अनुब्राह्मण,

उसको पढने वाला अनुब्राह्मण। इस शब्द का प्रयोग भट्टभास्कर ने तैत्तिरीय संहिता की भाष्यभूमिका में किया है। इससे प्रतीत होता है कि ब्राह्मण का ही अन्तरभाग अनुब्राह्मण पद से प्रयोग किया।

पूर्व ही कहा है कि ब्राह्मण ग्रन्थों का विस्तार अत्यधिक विशाल और व्यापक था। आश्वलायन गृह्यसूत्र में (३अ. ३ख.) ऋषि तर्पण के साथ आचार्य तर्पण का भी उल्लेख प्राप्त होता है। आश्वलायन के मतानुसार से मन्त्र द्रष्टा ऋषि होते हैं, और ब्राह्मण द्रष्टा आचार्य। इस प्रकार आचार्यों के यहाँ तीन गण उपलब्ध होते है - १ माण्डुकेय गण, २ शाङ्खायन गण, ३ और आश्वलायन गण। इनके आचार्यों के क्रमशः नाम है - कहोल, कौषीतक, महाकौषीतक, भरद्वाज, पैङ्ग्य, महापैङ्ग्य, सुयज्ञ, शाङ्खायन, ऐतरेय, वाष्कल, शाकल, गार्ग्य, सुजातवक्र, औदवाहि, सौजामि, शौनक तथा आश्वलायन। पैङ्ग्य महापैङ्ग्य इन नामों से प्रतीत होता है की महाभारत के समान भारत भी एक भिन्न ग्रन्थ था। एक छोटा तो दूसरा विशाल था। और भी शाङ्खायन ब्राह्मण ही कौषितकि ब्राह्मण नाम से विख्यात है, किन्तु इसका सूची में पृथक् पृथक् नाम से ज्ञात होता है कि ये दो आचार्य हैं। यहाँ निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कह सकते हैं, कि इन आचार्यों के द्वारा ब्राह्मण ग्रन्थों का निर्माण हुआ हो। किन्तु ऐतरेय तथा शाङ्खायन निश्चय से ही ब्राह्मण द्रष्टा ऋषि है। इनके ब्राह्मण ग्रन्थ आज भी उपलब्ध है।

पाठगत प्रश्न 5.1

1. वेदभाग का सूचक ब्राह्मण शब्द किस लिङ्ग में होता है?
2. ब्राह्मण ग्रन्थ विषय पर भट्टभास्कर का क्या मत है?
3. वेद कितने प्रकार का है?
4. पाणिनि के किस सूत्र में ब्राह्मण शब्द का प्रयोग देखा जाता है?
5. आचार्यों के तीन गण कौन-कौन से है?
6. ब्राह्मण द्रष्टा दो आचार्यों के नाम लिखिए।
7. शाङ्खायन ब्राह्मण का अन्य क्या नाम है?

5.2 संहिता ब्राह्मण के विषय की भिन्नता

संहिता का और ब्राह्मण के स्वरूप विषय में बहुत अंतर दिखाई देता है। बहुत संख्या के मन्त्र छन्दोबद्ध है, उनमे कुछ अंश ही गद्यात्मक है। किन्तु सभी ब्राह्मण ग्रन्थ गद्यात्मक ही होते हैं। इनके प्रतिपाद्य विषयों में भी अन्तर है। जैसे - ऋक् मंत्रो में देव-स्तुति की प्रधानता है। अथर्व मन्त्रों में इहलोक परलोक का फल देने के विषयों की विवेचना की है तथा घर निर्माण के लिये, हल जोतने के लिए, बीज बोने के लिए उपयोगी विषयों का तथा गृहस्थ जीवन के भी विविध

विषयों का वर्णन है। राजकीय विषय में भी – शत्रुओं के वध के लिए, सैन्य सञ्चालन के लिए तथा उसके उपयोगी साधनों का विस्तार सहित विवरण है। यजुर्वेद संहिता का विवेच्य विषय पूर्व वर्णित विषयों से नितान्त भिन्न ही है। ब्राह्मणों का मुख्य विषय है विधि- किसका विधान कब होना चाहिए। उसको किस प्रकार करना चाहिए। उसका क्या आकर और साधनों की आवश्यकता होती है। और कौन उन यज्ञों का अधिकारी होता है। इस प्रकार याज्ञिक विधानों के प्रतिपादन के लिए ही ब्राह्मण साहित्य का उद्भव हुआ। याज्ञिक विषयों में कुछ विरोध भी प्रतीत होता है, वहाँ शुद्ध करना भी ब्राह्मण का उद्देश्य है। शबर स्वामी के मत अनुसार से ब्राह्मण विधि की संख्या दस है। उसका तात्पर्य यह है कि संहिता स्तुति प्रधान है, ब्राह्मण ग्रन्थ में उसका विधान ही प्रधान है।

फल स्वरूप विविध विधि ही ब्राह्मण ग्रन्थों का मुख्य विषय है। जहाँ उपलब्ध अवान्तर विषय तो उन विधियों के ही पोषक और निर्वाहक है। इन विधानों के विषयों पर मीमांसकों द्वारा किया अभिधान अर्थवाद होता है। अर्थवाद में निन्दा है तथा याग उपयोगी द्रव्यों की प्रशंसा है। वहाँ विधि और विधान का मिलान होता है। निरुक्त जनित अर्थ से भी ब्राह्मण वाक्यों का समर्थन होता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में विधि ही उसका केन्द्र बिन्दु है, जिसके चारो और निरुक्त, स्तुति, आख्यान, हेतु, वचन आदि विविध विषय अपने अपने आवर्त्तन को पूर्ण करते है।

जैमिनि महोदय ने भी पूर्वपक्ष रूप से कहा है कि वेद में केवल विधि वाक्यों का ही अस्तित्व नहीं है, अपितु उसके विभिन्न विषयों के प्रतिपादक वाक्यों की भी सत्ता है। फल स्वरूप ये वाक्य अनर्थक ही हैं। इसी कारण उन वाक्यों की विधियों का प्रतिपादन नहीं करते हैं, जिससे उन वाक्यों की भी व्यर्थता प्रकट होती है। इसलिए कहते हैं – वेद के क्रियार्थ होने से अनर्थक मत का अर्थ हो सकता है। इस शङ्का के होने पर सिद्धान्त पक्ष का कथन है की इन वाक्यों की भी आवश्यकता है। इन वाक्यों का यद्यपि अपने स्वयं से कोई उपयोगिता नहीं है फिर भी ये विधि प्रशंसा में प्रयुक्त है। अत: इस विधि प्रतिपादित के अर्थ का ही अवान्तर वाक्य है। अत: परम्परा से इनका उपयोग विधि में अवश्य ही होता है – विधि से एक वाक्य होने से स्तुति अर्थ से विधि की हो (जैमि. सू १/२/२७)। यह विश्लेषण ब्राह्मण-विषयों को ही लक्ष्य करता है।

पाठगत प्रश्न 5.2

1. ऋक् मन्त्रों में किसकी प्रधानता है?
2. ब्राह्मण विधियों की संख्या दस प्रकार की है ये किसका मत है?
3. संहिता ब्राह्मण का प्रधान भेद क्या है?

5.3 विषय विवेचना

विधि शब्द का अर्थ होता है – यज्ञ, और उसके अङ्गों के तथा उपाङ्गों के अनुष्ठान का उपदेश है। ताण्ड्य ब्राह्मण में इसके अनेक भेद प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए वहिष्पवमान-स्तोत्र में

अध्वर्यु-उद्गाता आदि पांच ऋत्विजों के प्रसर्पण का विधान है। और वहाँ यज्ञादियों में दो नियम पालन की नितान्त आवश्यकता होती है। वहाँ प्रसर्पण करते हुए ऋत्विजों के धीरे धीरे चलने का विधान है। वहाँ चुप होने का भी विधान है। पांचो ऋत्विजो में अध्वर्यु, प्रस्तोता, उद्गाता, प्रतिहर्ता, ब्रह्मा, आदि के जाने की व्यवस्था है। इसी ही क्रम से पङ्क्ति बद्ध होकर उनके द्वारा गमन करना चाहिए। वहाँ पङ्क्ति भङ्ग होने पर पाप होता है, अनर्थ की भी सम्भावना बढती है। इस प्रदक्षिण काल में वे अपने हाथ में कुछ धारण करके ही चलते हैं।

शतपथ ब्राह्मण तो विधि विधानों का एक विशाल समूह उपस्थित करता है। प्रथम काण्ड में दर्शपौर्णमास आदि मुख्य के और अवान्तर के अनुष्ठानों का वर्णन याग क्रम से है। दूसरे काण्ड में आधान, पुनराधान, अग्निहोत्र, उपस्थापन, आग्रायण, दाक्षायण, आदि यज्ञों का वर्णन विस्तार से पुङ्ख और अनुपुङ्ख क्रम से है। विधि के साथ हेतु का भी युक्ति सहित वर्णन किया है। शतपथ ब्राह्मण के प्रारम्भ में ही हेतु के साथ ही विधि का निर्देश उपलब्ध होता है। पौर्णमास याग में दीक्षित मनुष्य पूर्व दिशा में आहवनीय, गार्हपत्य, अग्नि के मध्य में स्थित जल का स्पर्श करते हैं। इस जल स्पर्श का क्या कारण है ऐसा प्रश्न होने पर भी कहते हैं जल पवित्र होता है। वहाँ मिथ्यावादी मनुष्य यज्ञ के लिए उपयुक्त नहीं होता है। इस कारण से जल स्पर्श से यह पाप को छोड़कर पवित्र होता है। और उस जल स्पर्श से मनुष्य पवित्र होकर दीक्षित होता है। इस कारण यहां पर जल स्पर्श करते है। इसलिए कहते ही है - **अमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति तेन पूतिरन्तरतः। मेध्या वा आपः। मेध्यो भूत्वा व्रतमुपायानीति। पवित्रं वा आपः। पवित्रपूतो व्रतम् उपयानीति तस्माद्वा अप उपस्पृशति (शत. ब्रा. १/१/१/१:) इति।**

पाठगत प्रश्न 5.3

1. विधि शब्द का क्या अर्थ है?
2. कुछ यज्ञों का नाम लिखिए।
3. यज्ञ के लिए उपयुक्त मनुष्य कौन नहीं है?

5.4 विनियोग

ब्राह्मण ग्रन्थों में मन्त्रों के विनियोग का विस्तृत वर्णन है। किस मन्त्र का प्रयोग किस उद्देश्य से होता है, इसकी युक्ति सहित व्यवस्था ब्राह्मण ग्रन्थ में सब जगह उपलब्ध होती है। ब्राह्मण ग्रन्थ मन्त्रों की व्याख्या से ही उनके विनियोग का युक्त मत को सिद्ध करते है। अंत में मन्त्रों के तात्पर्य का जो बोध होता है वह तो ब्राह्मणों के अन्तरङ्ग आध्यात्मिक व्याख्या से ही जाना जाता है। ताण्ड्य ब्राह्मण दो तीन दृष्टान्त ही पर्याप्त होते है।

स नः पवस्व शंगवे (ऋ. १/११/३) इस ऋचा के गायन से पशुओं की रोग निवृत्ति होती है। इस विनियोग का विशिष्ट विवेचन की आवश्यकता नहीं है, जिससे यह बात तो मन्त्र पद से ही

सिद्ध होती है (६/१/६-९)। किन्तु - **आ नो मित्रावरुणा** (ऋ. ३/६२/१६) इस मन्त्र के गायन का प्रयोग दीर्घरोग निवृत्ति के लिए ही है। यह कथन भी कुछ आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। इस विषय में ब्राह्मण का कथन है कि मित्रावरुण का सम्बन्ध प्राण के और अपान के साथ है। दिन का देवता मित्र है, उससे यह प्राणों का प्रतिनिधि है। इसी ही क्रम से रात का देवता वरुण है, इसलिए यह अपान का प्रतीक है। फल स्वरूप दीर्घरोग निवारण के लिए इस मन्त्र का पूर्व में कहा विनियोग नितान्त युक्ति सहित है। बहुत जगह विनियोग के प्रसङ्ग में कल्पना का ही विशेष रूप प्रभाव से परिलक्षित होता है, किन्तु ब्राह्मण की व्याख्या रीति से, और अनुगमन से इस प्रकार कल्पना आश्रितों में कुछ स्थलों में भी युक्तिमत का प्रतिपादन करता है। वहाँ उदाहरण रूप से दविद्युत्या रुचा (ऋ. ९/६४-२८) इस मन्त्र को देखना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. मित्रावरुण का सम्बन्ध किसके साथ है?
2. दिन का देवता कौन है?
2. रात का देवता कौन है?

5.5 हेतु

हेतुपद से उनके कारणों का निर्देश होता है जिनके द्वारा कर्मकाण्ड विधि विशेष रूप से सम्पन्न होता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञीय विधि, विधान निमित्त का उचित कारण का भी निर्देश विस्तार से प्राप्त होता है। अग्निष्टोम याग में उद्गाता मण्डप में औदुम्बर की शाखा का पाठ करता है। इस विधान के कारण का निर्देश करते हुए ताण्ड्य ब्राह्मण का (६/४/१) यह कथन है की प्रजापति ने ऊर्जा का (बल का) विभाजन किया है। वहीं औदुम्बर वृक्ष की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार से औदुम्बर वृक्ष का देवता प्रजापति हुए। उद्गाता का भी सम्बन्ध प्रजापति के साथ ही है। इसलिए उद्गाता उदुम्बर शाखा का पाठ करना अपने कार्यों में प्रधान कर्म मानता है। इस अवसर में प्रयुक्त पाठ की भी व्याख्या की है। इस प्रकार से द्रोणकलश में सोमरस को स्रावित करके अग्निष्टोम में स्थापना की व्यवस्था है। इस द्रोणकलश की स्थापना रथ के पृष्ठ भाग में होती है। इस विधान कारण का पूर्ण निर्देश ताण्ड्य ब्राह्मण में (६/५/१) प्राप्त होते है।

प्रजापति से कामना करते हुए 'मैं प्रजाओं की सृष्टि करता हूँ' इस प्रकार, प्रजापति के मन का चिन्तन से ही उसके शिर से आदित्य की सृष्टि हुई। उसने प्रजापति के शिर का छेदन किया। उससे ही द्रोणकलश की सृष्टि हुई। उससे ही द्रोणकलश से सोमरस को पीकर देव अमर हुए। इस रूप से पत्थर पर द्रोणकलश की स्थापना के विषय में भी विधि, विधानों के कारण का निर्देश है। वहिष्पवमान-स्तोत्र में पांच ऋत्विज में आगे जाने वाला अध्वर्यु ने अपने हाथ में दर्भ को मुट्ठी में लेकर जाता है। कैसे, इस कारण का निर्देशन काल में ताण्ड्य ब्राह्मण में (६/७/१६/२०) घोड़े रूप को धरकर यज्ञ से जाने का तथा दर्भ से भरी मुट्ठी को देखकर उसके परावर्तन का आख्यान

हेतु रूप से उपस्थित है। इस प्रकार के हेतु वचन से पाठकों के अनुष्ठानों के कारण का अपने आप परिचय प्राप्त होता है, तथा समाधन रूपी श्रद्धा से उनकी उन्नति भी होती है।

पाठगत प्रश्न 5.5

1. उर्ज शब्द का क्या अर्थ है?
2. औदुम्बर वृक्ष का देवता कौन है?

5.6 अर्थवाद

यज्ञ में निषिद्ध पदार्थो की निन्दा ब्राह्मण ग्रन्थों के अनेक स्थलो में उपलब्ध होता है। यज्ञ में माष विधान का निषेध है। अत इसकी निन्दा इस वाक्य में है - अमेध्या वै माषा (तै. सं. ५/१/८/१)। अनुष्ठान के और हवनीय द्रव्यों के देवताओं की बहुत प्रशंसा से ब्राह्मणों के शरीर में वृद्धि हुई। अग्निष्टोम याग की विशेष प्रशंसा ताण्ड्य ब्राह्मण में (६/३) प्राप्त होती है। सभी कार्यों कल्याण के लिए इस यथार्थ यज्ञ रूप से कल्पना की। यागों का अधिक महत्त्व होने से यह ही सबसे बड़े यज्ञ के नाम से सुशोभित है (ताण्ड्य. ६/३/८-९)। इस प्रकार से वहिष्पवमान- स्तोत्र की स्तुति यहाँ उपलब्ध होती है (ता.६/८/५)। उपयोग विधि का आस्था पूर्वक सिद्धि के लिए ही अर्थवादा होते है। इन अर्थवाद से और प्रशंसा वचन से ब्राह्मण ग्रन्थ आदि से अन्त तक भरे हुए है।

पाठगत प्रश्न 5.6

1. यज्ञ में किसके विधान का निषेद्ध है?
2. अर्थवाद कौन है?

5.7 निरुक्ति

ब्राह्मण ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर शब्दों के निर्वचन का भी निर्देश प्राप्त होते है। यह निर्देश इतना मार्मिक और वैज्ञानिक है कि भाषाशास्त्र की दृष्टि से भी यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। निरूक्त में जिन शब्दों की व्युत्पत्ति प्राप्त होती है उनका मूल इन ब्राह्मण ग्रन्थों में उपलब्ध है। ये निर्वचन नहीं हैं काल्पनिक है। भाषाविज्ञान दृष्टि से भी इसकी वैज्ञानिकता अक्षुण्ण ही है। इसी प्रकार की निरुक्ति स्वयं संहिता भाग में भी उपलब्ध होती है। जिसका आश्रय लेकर ब्राह्मण ग्रन्थ की व्युत्पत्ति निर्मित हुई। जैसे दही और जल शब्द की व्याख्या संहिता ग्रन्थों में इस प्रकार से है - तद्ध्नोदधित्वम् (तै. सं. २/५/३/३/), उदानिर्षुमही: इति तस्मादुदकमुच्यते(अर्थ. ३/१/३/१)। शतपथ ब्राह्मण में और ताण्ड्य ब्राह्मण में उपयोगी निरुक्तियों का भण्डार है। अनेक प्रकार के स्तोत्रों

टिप्पणियाँ

का और साम नामो की सुन्दर निरुक्ति ताण्ड्य ब्राह्मण में उपलब्ध होती है। आज्यस्तोत्र की व्याख्या अजि शब्द से कहते हुए उसके व्याख्यान का भी क्रम प्राप्त होता है, जैसे – 'यदाजिमायन् तदा आज्यानाम् आजत्वम्' (ता. ७/२/१) रथन्तर की निरुक्ति इस प्रकार होती है – 'रथं मर्या क्षेप्लातारीत् इति तद्रथन्तरस्य रथन्तरत्वम्' (ताण्ड्य. ७/६/४)। इसी ही प्रकार से बृहत्साम नाम की निरुक्ति प्राप्त होती है – 'ततो बृहदनु प्राजायत। बृहन्मर्या इदं स ज्योगन्तरभूदिति तद्बृहतो बृहत्त्वम्' (ताण्ड्य. ७/६/५) इति। इसका यह अर्थ है – प्रजापति के मन में यह साम लम्बे समय तक रहा है। इसलिए इस साम का नाम बृहत्साम यह विशिष्ट नामकरण है।

5.8 आख्यान

ब्राह्मण ग्रन्थों में अर्थवाद का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इस वर्णन को पढ़कर साधारण पाठक प्रसन्न होते हैं, इनमें कुछ उद्विग्न करने वाले विषय समूह पर यहाँ वहाँ अत्यन्त रोचक, आकर्षक और महत्त्वपूर्ण आख्यान भी प्राप्त होते है। अंधकार में प्रकाश किरण के समान, ये आख्यान पाठक हृदय के उद्विग्न चित्त में शान्ति और शीतलता प्रदान करता है। विधि विधानों के अपने स्वरूप की व्याख्या ही इस आख्यान की माता है। और जब यह आख्यान यज्ञ के संकुचित प्रान्त को छोड़कर साहित्य के सार्वभौम क्षेत्र में रचे गए तब वैदिक कर्मकाण्ड के कर्कश भाव भी उसको रोक नहीं सके। यह आख्यान दो प्रकार का होता है –अल्पकाय आख्यान और दीर्घकाय आख्यान। अल्पकाय आख्यान में उन कथाओं की गणना होती है जिन कथाओं में युक्ति का प्रदर्शन हो। इन आख्यानों में कुछ मुख्य आख्यान है – 'वाचः देवान् परित्यज्य सलिले तदनु वनस्पतौ च प्रवेशः (ताण्ड्य.६/५/१०–१२); यज्ञस्वरूपे देवताभिः अनाक्रमणं तथा दर्भमुष्ट्या तस्य प्रत्यावर्त्तनं (ता. ६/७/१८), अग्निमन्थनकाले घोटकस्य अग्रे स्थापनम् (शत. १/६/४/१५), देवासुराणां मध्ये बहुविध सङ्ग्रामः' (शत. २/१/६/८–१८, ऐत. १/४/२३, ६/२/१)।

इन लघु आख्यानों में कुछ स्थलों पर अत्यधिक गम्भीर तत्व के तथ्यों का भी सङ्केत प्राप्त होता है, जो ब्राह्मण के कर्मकाण्ड वर्णन से बिल्कुल भिन्न होता है, तथा गहरे –गम्भीर अर्थ का भी प्रतिपादन होता है। प्रजापति की उपांशु रूप से प्रार्थना के लिए शतपथ ब्राह्मण में जिस कथानक का उपक्रम प्राप्त होता है वह तो बिल्कुल रहस्यमय है। श्रेष्ठता को प्राप्त करने के लिए वाणी और मन में झगड़ा हुआ। मन का कथन था कि मेरे बिना बताये बात को वाणी प्रकट नहीं कर सकती है। वाणी का कथन था कि जो बात तुम जानते हो उसका विज्ञापन मैं ही करता हूँ। मन द्वारा जाने हुए चिन्तित तथ्यों को वाणी ही प्रकट करती है। इसलिए मैं ही श्रेष्ठ हूँ। दोनों प्रजापति के पास गये। प्रजापति ने अपना निर्णय मन के पक्ष में ही दिया। इस कथानक के अंदर मनोवैज्ञानिक तथ्य का विशाल सङ्केत प्राप्त होता है (शत.१/४/५/८–२)। वाणी के सम्बद्ध अनेक प्रकार की आख्या रुचिकर और शिक्षाप्रद है। गायत्री छन्द सोम देवताओं को लेकर जा रहा था, मार्ग में गन्धर्वों ने उसका अपहरण कर लिया। तब देवो ने वाणी को उसके पास भेजा, वाणी उस सोम को लेकर वापस लौटने लगी। वाणी को अपने पक्ष में लाने के लिए गन्धर्व प्रयत्नशील हुए। वे स्तुति प्रशंसा वचनों से वाणी को संतुष्ट करके अपने पक्ष में करना चाहते थे। दूसरे पक्ष में देव भी गायन और वादन द्वारा उसको संतुष्ट करना चाहते थे। वाणी देवताओं के कार्यों से प्रसन्न होकर उनके पास

गई। इस कथा के प्रतीयमान उपदेश के ऊपर ब्राह्मण का मत है की आज भी स्त्री स्तुति की अपेक्षा से गायन के प्रति अधिक आकर्षित होती है। स्त्रिय स्वभाव से ही इस प्रकार की होती हैं। (शत. ३/२/४/२/६)।

सृष्टि-विषय में भी अनेक आख्यान ब्राह्मण ग्रन्थ में उपलब्ध हैं। परम पुरुषार्थ चारों के उत्पत्ति वर्णन का उल्लेख तो पुरुष सूक्त में ही उपलब्ध होता है। ब्राह्मणों में भी इस प्रसङ्ग का सुंदर वर्णन प्राप्त होता है। ताण्ड्य ब्राह्मण में (६/१) प्रजापति के अङ्ग विशेष का वर्णन तथा उन देवताओं की उत्पत्ति का वर्णन है। इस वर्णन में शूद्र वर्णों का यज्ञ अधिकार से निकलने का भी सुंदर वर्णन प्राप्त होता है। प्रजापति के मुख से ब्राह्मण का और अग्नि का भुजाओं से क्षत्रिय का और इन्द्र का, मध्यदेश से वैश्य का और विश्वदेव का, पाद से केवल शूद्र की ही उत्पति बताई शूद्र का कर्त्तव्य का भी निर्देश- 'तस्मात् शूद्र उत बहुपशुरयज्ञियो विदेवो हि। नहि तं काचन देवसान्वसृज्यत। तस्मात्पादावनेज्यं नातिवर्धते। पत्तोहि सृष्टः' (ताण्ड्य. ६/१/११)।

पाठगत प्रश्न 5.7

1. वाणी को अपने पक्ष में लाने के लिए किस किसने प्रयत्न किया?
2. स्त्रियाँ स्वभाव से किस प्रकार होती है?
3. किसने चारो वर्ण का सृजन किया?
4. कहा चारो वर्ण की उत्पत्ति लिखी हुई है?

पाठ का सार

ब्राह्मणशब्द नपुंसकलिङ्ग में और क्लीब् में कोई लिङ्ग नहीं है। ब्राह्मणशब्द का यज्ञ अर्थ भी है। यज्ञीय कर्मकाण्ड की व्याख्या-विवरण के सम्पादन ब्राह्मण ग्रन्थों का मुख्य विषय है। ब्राह्मण में मन्त्र, कर्म, विनियोग की व्याख्या है। संहिता ब्राह्मण के मध्य में महान भेद है। बहुसंख्यक संहिता छन्दोबद्ध है, उनमे कुछ अंश ही गद्यात्मक है। किन्तु ब्राह्मण ग्रन्थ सभी प्रकार से गद्यात्मक ही होते है। विवेचना विषय पर भी अंतर दिखते हैं। और ब्राह्मण ग्रन्थों में विविध विधियों के विषय में आलोचना है। और वे विधि जैसे विनियोग, हेतु, निरुक्ति, आख्यान इत्यादि। ब्राह्मण में यज्ञ के सम्बद्ध में और उसके विविध उपदेशों का वर्णन है। उनमें मन्त्रों के विनियोग विषय पर विस्तार सहित वर्णन प्राप्त होता है। किस मन्त्र का किस समय में प्रयोग होना चाहिए, इत्यादि विधि का उपदेश यहाँ दिया है। और इन विनियोग का वैज्ञानिक दृष्टि से भी वहाँ समानता प्रदर्शित है। हेतुपद से उनके कारणों का निर्देश होता है, जो कर्मकाण्ड विधि को सही रूप से सम्पन्न करते हैं। यज्ञ में निषिद्ध पदों की निन्दा का जहाँ विधान हो वह अर्थवाद, उपयोग विधि का आस्था पूर्वक सिद्धि

के लिए ही ये अर्थवाद होते। ब्राह्मणों में शब्दों के निर्वचन का मार्मिक और वैज्ञानिक निर्देश निरुक्त में कहा है। वहाँ अर्थवाद के विस्तृत वर्णन प्राप्त होते हैं, जिससे पाठक प्रसन्न होते हैं। और यहाँ विभिन्न स्थलों में अत्यन्त आकर्षक आख्यान भी प्राप्त होते हैं। ये आख्यान पाठक हृदय के उद्विग्न मन में शान्ति और शीतलता देते हैं। विधि विधानों के अपने स्वरूप की व्याख्या ही इन आख्यानों की माता है।

पाठांत प्रश्न

1. ब्राह्मण ग्रन्थों के महत्त्व का वर्णन कीजिए।
2. प्रधान ब्राह्मण ग्रन्थों का वेद निर्देश सहित नाम लिखिए।
3. वाणी और मन के आख्यान का प्रतिपादन कीजिए।
4. कुछ मुख्य आख्यानों के उदाहरण दीजिए।
5. संहिता ब्राह्मण का भेद लिखिए।
6. किसी के प्रतिपादन के लिए ब्राह्मण साहित्य का उद्‌भव बताइए।
7. देव कैसे अमर हुए?
8. निरुक्त में कुछ निर्वचनों के उदाहरण लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. नपुंसक लिङ्ग में।
2. ब्राह्मण नाम कर्म और उनके मन्त्रों का व्याख्यान ग्रन्थ हैं।
3. दो प्रकार, मन्त्र रूप और ब्राह्मण रूप।
4. अनुब्राह्मणादिनिः (पा. सू. ४/२/६२) इस सूत्र में।
5. माण्डुकेय गण, शाङ्खायन गण, और आश्वलायन गण।
6. एतरेय और शाङ्खायन।
7. कौषितकी ब्राह्मण।

5.2

1. देव स्तुति में।
2. शबर स्वामी।
3. संहिता में स्तुति प्रधान है, ब्राह्मण ग्रन्थ में उसके विधानों की ही प्रधानता है।

5.3

1. यज्ञ।
2. आधान,पुनराधान, अग्निहोत्र, उपस्थापन, आग्रायण, दाक्षायण आदि कुछ यज्ञों के नाम है।
3. मिथ्यावादी।

5.4

1. प्राण के और अपान के साथ।
2. मित्र।
3. वरुण।

5.5

1. बल (शक्ति)।
2. प्रजापति।

5.6

1. माष का।
2. प्रशंसा वचन।

5.7

1. गन्धर्व।
2. स्तुति की अपेक्षा गायन के प्रति अधिक आकृष्ट होते है।
3. परम पुरुष से।
4. पुरुष सूक्त में।

॥ पांचवा पाठ समाप्त॥